K. Nand M.A II Sem
22/01/2022

प्रतिरूप (cultural pattern) कहते हैं। इनका गहरा प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार या पारस्परिक क्रिया पर पड़ता है। अतः व्यक्ति के व्यवहार या पारस्परिक क्रिया को उस संस्कृति के प्रतिरूपों (Patterns) के आलोक में समझना आवश्यक है, जिसका वह सदस्य है। सांस्कृतिक प्रतिरूपों में भिन्नता के कारण ही कोई एक हाथ उठाकर, कोई दोनों हाथों को जोड़ कर, कोई सिर झुकाकर और कोई जीभ निकालकर एक दूसरे का अभिनंदन करता है। सांस्कृतिक मूल्यों में अंतर होने के कारण ही भारतीय पत्नियाँ अपने पति को परमेश्वर समझकर उनके साथ व्यवहार करती है, जबकि अमरीकी पत्नियाँ केवल सेक्स-साथी (Sex Partner) समझ कर व्यवहार करती है।

भूमिका-तनाव (Role strain) को समझने की भी सांस्कृतिक तन्त्र (cultural system) से मदद मिलती है, जिस सांस्कृतिक में असामानता (inequality) अधिक होती है, वहाँ भूमिका-तनाव अधिक होता सैनिक सेवा (military service) में भिन्न भिन्न कोटियों (ranks) के बीच सम्बन्धों में असमानता के कारण एक विशेष प्रकार का भूमिका-तनाव उत्पन्न होता है। अमेरिका में विभिन्न कोटियों के बीच सम्बन्धों को समान बनाने की दौड़ के कारण भूमिका-तनाव काफी बढ़ गया (Second and Backman, 1975)। भारत में भिन्न-भिन्न जातियों (castes), वर्गों (classes) तथा समूहों (communities)

K. Nand M.A I Sem
22/01/2022

Date...................

Expt. No......................

Page No......................

के बीच समानता की होड़ ने भूमिका-तनाव को इस हद तक बढ़ा दिया है कि भारत की अखण्डता खतरों में पड़ती हुई दीख पड़ती है।

स्पष्ट हुआ की पारस्परिक क्रिया (Interaction) अथवा सामाजिक व्यवहार को समुचित रूप में समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसका विश्लेषण व्यक्तित्व-तन्त्र (Personality system) सामाजिक-तन्त्र (social-system) तथा सांस्कृतिक-तन्त्र (cultural system) के आलोक में किया जाए। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र (sociology) तथा समाज मानवशास्त्र (anthropology) का मौलिक सम्बन्ध क्रमशः व्यक्तित्व-तन्त्र, सामाजिक तन्त्र तथा सांस्कृतिक तंत्र से है। लेकिन समाज-मनोविज्ञान का सम्बन्ध एक ही साथ इन तीनों तन्त्रों से है। कारण, समाज-मनोविज्ञान में जिस पारस्परिक क्रिया (Interaction) या व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, वह इन तीनों तन्त्रों का परिणाम होता है। दूसरे शब्दों में समाज-मनोवैज्ञानिक व्यक्ति के व्यवहार के तीनों चरों (variables) के आलोक में समझने का प्रयास करते हैं। सेकर्ड तथा बैकमैन (Secord and Backman, 1974) ने निष्कर्ष के रूप में ठीक ही कहा है इन तीनों तन्त्रों के बीच गहरा संबंध है और सामाजिक व्यवहार या पारस्परिक क्रिया (Interaction) वास्तव में एक ऐसा आश्रित चर (Dependent variable) जो इन तीनों स्वतंत्र चरों (Independent variables) अर्थात व्यक्तित्व तन्त्र, सामाजिक-तन्त्र तथा सांस्कृतिक तन्त्र का संयुक्त प्रभाव (Joint Effect) है।

Teacher's Signature : ....

P.T.O.